भगवान बुद्ध के अग्रउपासक

अग्रपाल राजवैद्य जीवक

(लोगों द्वारा पसंद किये जाने वालों में अग्र)

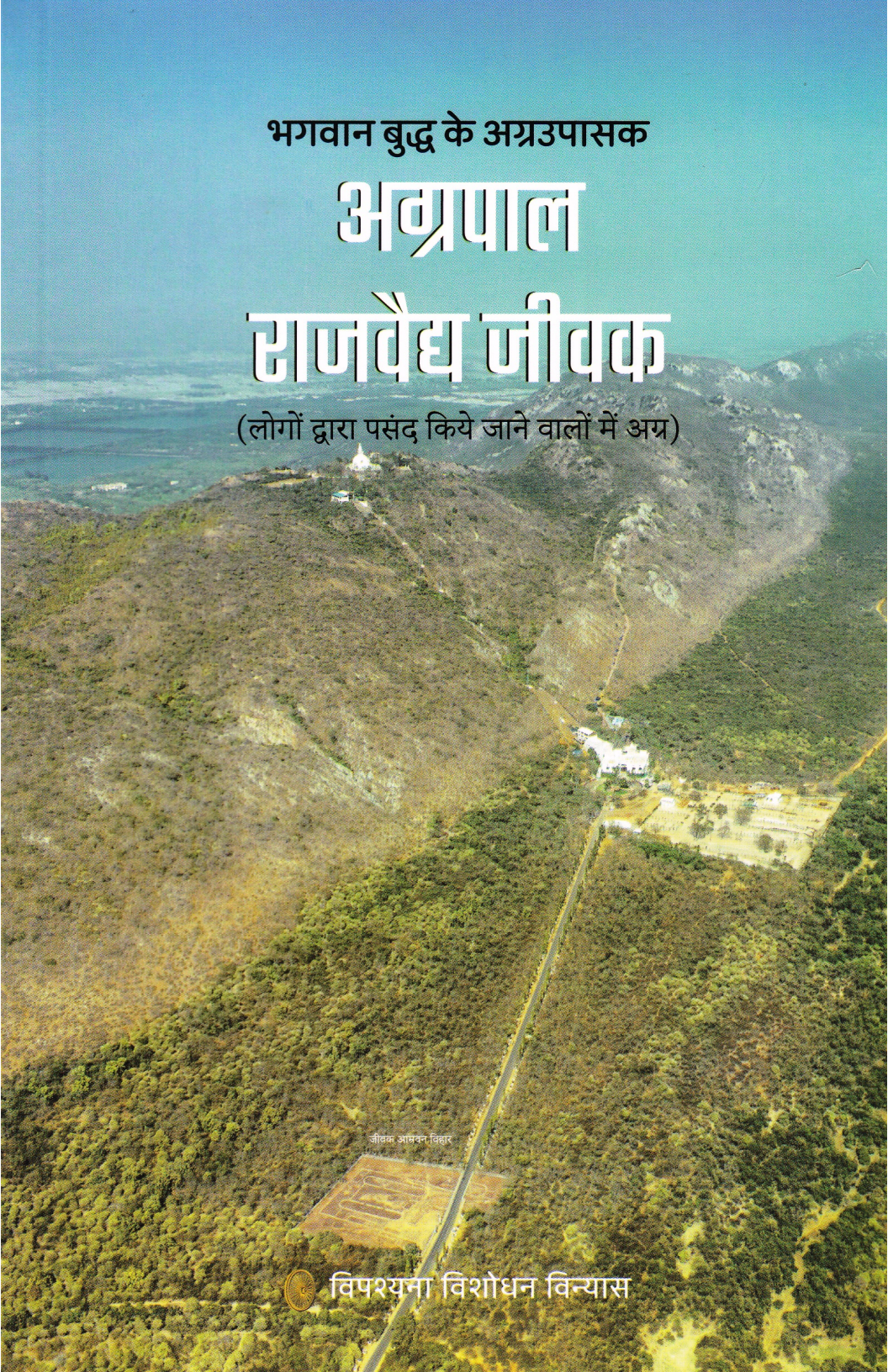

विपश्यना विशोधन विन्यास

विपश्यना एवं आयुर्वेद सम्भाषा-परिषद्
अक्तूबर 15 एवं 16, 2005 के अवसर पर प्रकाशित

भगवान बुद्ध के अग्रउपासक

अग्रपाल राजवैद्य जीवक

(लोगों द्वारा पसंद किये जाने वालों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

अग्रपाल राजवैद्य जीवक

पुस्तक कोड : **H32**

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण: २००५
पुनर्मुद्रण: २००९, २०१४
द्वितीय संस्करण: अगस्त २०२५

मूल्य : रु.
Price: Rs.

ISBN 81-7414-275-4

प्रकाशक:
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: ०२५५३-२४४९९८, २४३५५३, २४४०७६, २४४०८६,
८४८४८३४८३७, ८४८४८३७८३५,
८४८४८३९८३७, ८४८४८३१८३५
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रक:
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

“एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं पुग्गलप्पसन्नानं यदिदं जीवको कोमारभच्चो।”

“भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में लोगों द्वारा पसंद किये जाने वालों में अग्र हैं कौमारभृत्य जीवक।”

– अङ्गुत्तरनिकाय (१.१.२५६)

अग्रपाल राजवैद्य जीवक

अग्रपाल राजवैद्य जीवक

विषयानुक्रमणिका

अग्रपाल राजवैद्य जीवक.....7

साकेत के नगरसेठ की भार्या 9

भगंदर का रोगी बिंबिसार 11

जीवक उपासक हुआ 12

मस्तिष्क पर शल्यक्रिया 12

अँतड़ी में गांठ.....14

तथागत की चिकित्सा.....15

अवंति नरेश का पांडुरोग 16

गृहस्थों द्वारा दिया गया चीवर का दान स्वीकार्य.....18

आम्रवन विहार.....19

उपासक के आचरण 19

चंक्रमण और जंताघर.....20

प्रव्रज्या की अयोग्यता.....21

चूलपंथक और महापंथक 22

तथागत के चोट की मरहम-पट्टी (व्रण-बंधन) 27

अजातशत्रु को भगवान के पास ले जाना.....28

जीवक के छह गुण.....30

अग्रपाल स्रोतापन्न 30
अग्र की उपाधि प्राप्त करने का आशीर्वचन.....31
विपश्यना साधना केंद्र.....32